हफ़्तावार रिसाला : 404
Weekly Booklet : 404

Tafseere Noorul Irfan Se 85 Madani Phool (Qist - 4) (Hindi)

# “तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान”

## से 85 मदनी फूल (क़िस्त : 4)

सफ़हात : 17


जि़द का इलाज 03
पूरी दुन्या पर हुक्मरानी करने वाले 4 बादशाह 04
इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के वालिद का नाम 07
क़ानून और क़ुदरत में फ़र्क 13

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# “तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान” से 85 मदनी फूल (क़िस्त : 4)

**दुआए अ़त्तार :** या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला “तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान” से 85 मदनी फूल (क़िस्त : 4) पढ़ या सुन ले उसे दुन्या व आख़िरत की भलाइयों से मालामाल फ़रमा और उस की मां बाप समेत बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा दे ।

اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى الله عليه واٰله وسلّم

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए । सज्दे को इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं अल्लाह पाक ने रूहे़ मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो । चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा । जब सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया : “ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या हुवा ?” मैं ने अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : “जिब्रईले अमीन ने मुझ से कहा :” क्या आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह बात ख़ुश नहीं करती कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती उतारूंगा ।

(مسند امام احمد، 1/406، حدیث:11662)

ज़माने वाले सताएं, दुरूदे पाक पढ़ो    जहां के ग़म जो रुलाएं, दुरूदे पाक पढ़ो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

# मदीने से गुजरात जाने का हुक्म

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सात मरतबा ह़रमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए। एक मरतबा ह़ज के बाद लम्बे अ़र्से तक मदीनए मुनव्वरा की पुर कैफ़ और नूर बार फ़ज़ाओं में अपनी ज़िन्दगी के ह़सीन अय्याम गुज़ारे, दिल में येह ख़्वाहिश मचलने लगी कि काश ! कोई ऐसी सूरत निकल आए कि हमेशा के लिये इसी पाक सर ज़मीन पर रहना नसीब हो जाए। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के क़रीब रहने वाले एक साहि़ब को ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई और येह हुक्म मिला : **"अह़मद यार ख़ान से कहो कि वोह गुजरात जाएं और तफ़्सीर का काम करें।"** आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तक जब येह पैग़ाम पहुंचाया गया तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बेह़द ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे : बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह हुक्म मिला है कि गुजरात जाओ ! तो अब गुजरात ही मेरे लिये मदीना है। (ह़याते सालिक, स. 127 मुलख़्ख़सन)

मदीने का कुछ काम करना है सय्यिद
मदीने से मैं इस लिये जा रहा हूं

# आ़शिक़े सादिक़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

ह़कीमुल उम्मत, सच्चे आ़शिक़े रसूल, आ़लिमे बा अ़मल, सूफ़िये बा सफ़ा, मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुबारक नाम से कौन सा आ़शिक़े रसूल मुतआ़रिफ़ नहीं ? अल्लाह पाक ने दुन्या भर में मुफ़्ती साहि़ब को और आप की किताबों और तफ़्सीरों को मक़्बूलिय्यत अ़ता फ़रमाई है और मक़्बूलिय्यत क्यूं न हो कि तफ़्सीर लिखने का हुक्म तो आप को बारगाहे रिसालत से हुवा। मुफ़्ती साहि़ब की मश्हूर दो तफ़ासीर हैं : ﴾1﴿ तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान ﴾2﴿ तफ़्सीरे नईमी (येह मुकम्मल तफ़्सीर मुफ़्ती साहि़ब की नहीं है, 11 पारों की तफ़्सीर लिखने के बाद आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया।)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने वक़्त के बहुत बड़े आ़लिमे दीन और मुह़द्दिस थे। आप की तह़रीरात व तस्नीफ़ात पढ़ें तो

ऐसा लगता है गोया हर हर सत्र (यानी लाइन) से इश्क़े रसूल के चश्मे फूट रहे हों । तफ़्सीरे क़ुरआन हो या ह़दीस की शर्ह़, मुफ़्ती साहि़ब शाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बयान करने का कोई मौक़अ़ जाने नहीं देते । अ़क़्ली दलाइल से मुतअस्सिर होने वालों को अ़क़्ली और आ़म मुसलमानों की नक़्ली (यानी क़ुरआनो ह़दीस से) मिसाल देते हैं कि अगर बन्दे ने तन्क़ीद की ऐनक न पहनी हो तो अश अश कर उठे । येह रिसाला आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मश्हूर तफ़्सीर “नूरुल इरफ़ान” के ह़सीन निकात पर मुश्तमिल है । अल्लाह पाक मुफ़्ती साहि़ब के मज़ार पर रह़मतो अन्वार की बरसात फ़रमाए और हमें उन के फ़ैज़ान से माला माल फ़रमाए । اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّى اللهُ عليهِ واٰلهٖ وسلَّم

## “सूरतुल कहफ़” से ह़ासिल होने वाली 9 ख़ूब सूरत बातें

﴾1﴿ सूफ़िया की इस्त़िलाह़ में नेक अ़मल वोह हैं जो अल्लाह रसूल की रिज़ा के लिये किये जाएं लिहाज़ा रिया की नमाज़ बद अ़मली है और अल्लाह की रिज़ा के लिये खाना पीना, सोना जागना भी नेकी है ।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 353)

﴾2﴿ रब तआ़ला हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर ऐसा मेहरबान है कि मां बाप भी अपनी औलाद पर ऐसे मेहरबान नहीं होते कि वोह अपने मह़बूब की हर ह़ालते क़ल्बी (हर मुआ़मले) की हर वक़्त ख़बर गीरी फ़रमाता है ।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 798)

﴾3﴿ सालिह़ीन के क़ुर्ब में मस्जिद बनाना बेहतर है कि वहां नमाज़ ज़ियादा क़बूल होती है । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 356)

﴾4﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को सालेह़, ग़रीब बड़े प्यारे और मह़बूब हैं क्यूंकि उन के दिल टूटे हुए हैं और मह़बूब टूटे दिलों की आस हैं ।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 800)

## ज़िद का इलाज

﴾5﴿ जो दलाइल और समझाने से न माने वोह जूते खाना चाहता है, ज़िद का

इलाज सिर्फ़ अ़ज़ाबे इलाही है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 360)

《6》 गुनाहों को भूल जाना मर्दूदों का त़रीक़ा है। गुनाह याद रखना और नेकी भूल जाना सालिह़ीन का त़रीक़ा है। अपने गुनाह और दूसरों की नेकी ज़रूर याद रखो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 361)

## इ़ल्म की त़लब और सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ अहम मालूमात

《7》 त़लबे इ़ल्म के लिये सफ़र करना सुन्नते पैग़म्बर है, उस्ताद के पास जाना, उसे (पढ़ाने के लिये) घर न बुलाना सुन्नत है, इ़ल्म की ज़ियादती चाहना बेहतर है, सफ़र में तोशा (यानी सामान) साथ रखना अच्छा है, सफ़र में अच्छा साथी होना बेहतर है, उस्ताद का अदब करना ज़रूरी है, उस्ताद की बात पर एतिराज़ न करना चाहिये। इ़ल्म सिर्फ़ किताब से नहीं आता, उस्ताद की सोह़बत से भी आता है, बुज़ुर्गों की सोह़बत कीमिया का असर रखती है। एक मामूली लोहा कारीगर का हाथ लगने से क़ीमती औज़ार बन जाता है, एक मामूली इन्सान कामिल सोह़बत से शान वाला बन जाता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 361)

《8》 कुल चार बादशाह तमाम दुन्या के मालिक हुए, दो मोमिन : ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और सिकन्दर ज़ुल क़रनैन (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه)। दो काफ़िर : बुख़्ते नस्र और नमरूद। ज़ुल क़रनैन इसी लिये कहते हैं कि आप ने सूरज के दोनों क़िरनों यानी मशरिक़ व मग़रिब की सैर फ़रमाई।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 364)

《9》 बदकार से ज़ियादा बद नसीब वोह नेक कार है जो मेह़नत मशक़्क़त उठा कर नेकियां करे मगर उस की कोई नेकी उस के काम न आए, वोह धोके में रहे कि मैं नेक कार हूं। खुदा की पनाह! (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 366)

## "सूरए मरयम" से ह़ासिल होने वाली 9 खूब सूरत बातें

《1》 दुआ़ के वक़्त अपनी इ़ज्ज़ व माज़ूरी का ज़िक्र करना बेहतर है। मौला तआ़ला के गुज़श्ता इन्आ़मों का ज़िक्र भी सुन्नते अम्बिया और क़बूलिय्यते दुआ़

का ज़रीआ़ है गोया इस सूरत में बन्दा रब के करम को करम का ज़रीआ़ बनाता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 367)

《2》 पैग़म्बर का दामन, अ़ज़ाबे इलाही से पनाह की जगह है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 803)

《3》 बेटे का बाप के साथ बड़ा सुलूक (यानी अच्छा सुलूक) येह है कि उस को कोशिश से या दुआ़ से हिदायत पर लाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 371)

《4》 इबादते इलाही से बद नसीबी दूर होती है ख़ुश नसीबी ह़ासिल होती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 371)

《5》 नमाज़ों में सुस्ती तमाम गुनाहों की जड़ है, इस सुस्ती की कई सूरतें हैं : नमाज़ न पढ़ना, बे वक़्त पढ़ना, बिला वज्ह बिग़ैर जमाअ़त पढ़ना, हमेशा न पढ़ना, रियाकारी से पढ़ना वग़ैरा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 372)

《6》 रब की शान कि कुफ़्फ़ार ने भी अपने किसी बुत का नाम "अल्लाह" न रखा था, जब नाम में भी कोई रब का शरीक नहीं तो काम में कैसे शरीक हो सकता है। अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से पहले किसी नबी या वली का नाम मुह़म्मद न रखा, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का येह मुबारक नाम भी अछूता (यानी अनोखा) रहा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 803)

《7》 क़ियामत में काफ़िरों की ह़ाज़िरी ऐसी होगी जैसे मुजरिम की ह़ाज़िरी ह़ाकिम के सामने और मोमिनों की ह़ाज़िरी ऐसी होगी जैसे मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की ह़ाज़िरी मेहरबान मेज़बान के सामने। ह़ाज़िरी एक है मगर नौइय्यत में फ़र्क़। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 374)

《8》 रब के लिये औलाद साबित करना इतना बड़ा गुनाह है कि अगर अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़ब फ़रमा दे तो आस्मान फट जाएं, पहाड़ टुक्ड़े हो जाएं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 804)

《9》 वली की अ़लामत येह है कि ख़ल्क़त (यानी मख़्लूक़) उसे वली

कहे और उस की त़रफ़ क़ुदरती त़ौर पर दिल खिंचें।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 375)

## "सूरए त़ाहा" से ह़ासिल होने वाली 4 ख़ूब सूरत बातें

《1》 इ़श्क़ो अदब में जब मुक़ाबला हो तो इ़श्क़ ग़ालिब आता है क्यूंकि अदब का तक़ाज़ा है कि बात छोटी की जाए मगर इ़श्क़ का तक़ाज़ा है कि मह़बूब से लम्बी गुफ़्तगू करो ताकि देर तक हम कलामी क़ाइम रहे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 804)

《2》 जादू में ह़क़ीक़त नहीं बदलती बल्कि देखने वाले के ख़याल और आंख पर असर होता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 379)

《3》 दाढ़ी एक मुश्त होनी चाहिये यानी चार उंगल जो पकड़ने में आ सके। येही सुन्नते अम्बिया है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 382)

《4》 क़ियामत में कुफ़्फ़ार की चन्द खुली अ़लामतें होंगी : मुंह काला, आंखें नीली, हाथ बन्धे हुए, नामए आमाल बाएं हाथ में जब कि मोमिन का ह़ाल इस के बरअ़क्स (यानी उलट) होगा, लिहाज़ा क़ियामत में काफ़िर मोमिन की पहचान हर शख़्स को होगी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 383)

## "सूरतुल अम्बिया" से ह़ासिल होने वाली 13 ख़ूब सूरत बातें

《1》 जो अ़लानिया त़ौर पर (यानी खुल्लम खुल्ला) हु़ज़ूर (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को अपने जैसा बशर कहे वोह कुफ़्फ़ार से बदतर है नीज़ नबी को अपने जैसा बशर कहना तमाम कुफ़्रिय्यात की जड़ है, तमाम कुफ़्र उस की शाख़ें हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 387)

《2》 दीनी उमूर से बे इ़ल्मी जुर्म है, इन का समझना फ़र्ज़ है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 389)

《3》 रब तआ़ला ईमान की बिना पर मोमिन गुनाहगार से भी राज़ी है क्यूंकि शफ़ाअ़त गुनाहगारों की भी होगी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 389)

《4》 फ़िरिश्ते बा वुजूद मासूम होने के हैबते इलाही (यानी अल्लाह पाक के डर) से कांपते हैं। ख़याल रहे कि "ख़श्यत" अ़ज़्मत के ख़ौफ़ को कहते हैं और "इश्फ़ाक़" रब की बे नियाज़ी के ख़ौफ़ को। रब से डरना रुक्ने ईमान है जो अम्बिया, औलिया फ़िरिश्ते सब को ह़ासिल है बल्कि जितना ईमान क़वी उतना ही ख़ौफ़ ज़ियादा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 389)

《5》 हर हैवान पानी से ज़िन्दा है या नुत़्फ़े से पैदा हुवा। सब की अस्ल पानी है ह़त्ता कि ज़मीनो आस्मान भी पानी से बने। आस्मान पानी की भाप है और ज़मीन पानी की झाग। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 390)

《6》 सूफ़ियाए किराम (رحمۃُاللہِعلیھم) फ़रमाते हैं कि एक साअ़त (यानी लम्ह़ा भर) की फ़िक्र (मुह़ासबा) हज़ार साल के उस ज़िक्र से अफ़्ज़ल है जो बिग़ैर फ़िक्र के हो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 390)

《7》 आ़शिक़ों के लिये मौत का मज़ा लज़ीज़ है और ग़ाफ़िलों के लिये सख़्त बद मज़ा। मौत रेल की त़रह़ किसी को मह़बूब तक और किसी को जेल तक पहुंचाती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 390)

《8》 पैग़म्बर पर अह़काम सुना देना लाज़िम हैं, दिल में उतारना लाज़िम नहीं, येह रब का काम है। जो वाज़ से नफ़्अ़ ह़ासिल न करे, वोह बहरा है, अन्धा है, मुर्दा है अगर्चे बज़ाहिर उस में सब क़ुव्वतें मौजूद हों।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 391)

《9》 इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा मोमिना थीं। किसी नबी की मां मुश्रिका न हुई। आप के वालिद "तारिख़" और "चचा आज़र" थे। आज़र उस दिन हलाक हुवा जिस दिन आप (عَلَيْهِ السَّلَام) को नमरूदी आग में डाला गया। उसी आग के एक शोले ने उसे (यानी आज़र) फ़ना कर दिया। आप ने उस की हलाकत के बाद कभी उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत न की और अपने वालिदैन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत की जब कि आप साहिबे औलाद हो चुके थे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 392)

《10》 ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के हुक्म से हवा चलती थी लिहाज़ा येह कहा जा सकता है कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के हुक्म से चांद फटा, सूरज वापस हुवा, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के हुक्म से बारिशें हुईं वग़ैरा, येह हुक्म अ़ताए ख़ुदावन्दी से है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 395)

《11》 अपनी ह़ाजत पेश करना भी दुआ़ है और रब की ह़म्दो सना भी दुआ़ है। दुआ़ में रब की ह़म्द ज़रूर करनी चाहिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 395)

《12》 जो मक़्बूलुद्दुआ़ होना चाहे वोह येह तीन काम करे : (1) नेकियों में देर न लगाए (2) हर वक़्त रब से दुआ़एं मांगे और (3) रब के हुज़ूर आ़जिज़ी और इन्किसारी करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 396)

《13》 याजूज माजूज इन्सानों के दो क़बीले हैं, इस क़दर ज़ियादा हैं कि नौ ह़िस्से येह हैं और दसवां ह़िस्सा बाक़ी सारे इन्सान, जब वोह निकलेंगे तो तमाम दरियाओं का पानी पी जाएंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 807)

## “सूरतुल ह़ज” से ह़ासिल होने वाली 15 ख़ूब सूरत बातें

《1》 मां का पेट तुम्हारे लिये जाए क़रार (यानी सुकून ह़ासिल करने का मक़ाम) न था आ़रज़ी मक़ाम था। ऐसे ही दुन्या जाए क़रार नहीं, जाए फ़रार भाग जाने की जगह है। तुम्हें मां के पेट में बदन कामिल करने (यानी मुकम्मल जिस्म बनाने) को रखा और दुन्या में रूह़ कामिल करने को ठहराया।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 399)

《2》 जवानी बुलूग़ से ले कर तीस साल की उ़म्र तक है जिस में अ़क़्ल कामिल होती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 399)

《3》 ईमान जन्नत में दाख़िले का सबब है और आमाल वहां की नेमतों का और दरजात का बाइ़स हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 400)

《4》 ज़मीनो आस्मान की सारी मख़्लूक़ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नज़र में है

और सब की इबादात व आमाल हुज़ूर देख रहे हैं। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ख़ुद फ़रमाते हैं कि मुझ पर तुम्हारे रुकूअ़ सुजूद, तुम्हारे ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ छुपे नहीं। यानी क़ियामत तक के हर मोमिन की ह़रकत से ख़बरदार हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 401)

﴾5﴿ आग के कपड़े, खौलते पानी का ग़ुस्ल, खौलता पानी पीना, लोहे के गुर्ज़ों (एक हथियार जो ऊपर से गोल मोटा और नीचे से पतला होता है) से मार पड़ना, कुफ़्फ़ार का अ़ज़ाब है। रब तआ़ला मोमिनों को इस से मह़फ़ूज़ रखेगा। बाज़ गुनाहगार मोमिन दोज़ख़ में अपने गुनाहों से पाको साफ़ होने जाएंगे, जैसे आग में गन्दा और मैला सोना।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 807)

﴾6﴿ आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अव्वलन काबा बनाया जो तूफ़ाने नूह़ के वक़्त ग़ाइब हो गया, फिर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को तामीरे काबा का हुक्म हुवा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 402)

﴾7﴿ मस्जिदों में झाड़ू देना, उन्हें साफ़ सुथरा रखना, वहां की ज़ीनत करना, सुन्नते इब्राहीमी और आला दर्जे की इबादत है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 807)

﴾8﴿ नबी का मोजिज़ा येह भी है कि उन की आवाज़ मशरिक़ व मग़रिब में पहुंच जाए और मौजूद व मादूम (ना मौजूद) सब सुन लें। येह करामत बाज़ औलिया से भी ज़ाहिर होती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 807)

﴾9﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हमेशा मदीनए पाक में क़ुरबानी करते थे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 403)

﴾10﴿ इस्लाम से पहले भी दूसरी उम्मतों पर क़ुरबानियां थीं, येह बड़ी पुरानी इबादत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 808)

《11》 कुरबानी के जानवर सजाना, उन्हें घुमाना सब जाइज़ है कि येह शआ़इरुल्लाह (अल्लाह की निशानियों) की ताज़ीम है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 404)

## कुरबानी के आदाब

《12》 शआ़इरुल्लाह की ताज़ीम ईमान की अस्ल है। कुरबानी की ताज़ीम येह है कि उसे ख़ूब फ़र्बा (यानी मोटा ताज़ा) करे, ख़ुशी से ज़ब्ह़ करे, बिला ज़रूरत उस पर सुवार न हो, उस का दूध न पिये, ज़ब्ह़ के बाद उस का गोश्त तबर्रुकन खाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 404)

《13》 औलियाउल्लाह के आस्तानों पर ह़ाज़िरी देनी चाहिये ताकि वहां की रौनक़ देख कर नेक आमाल का शौक़ पैदा हो। ख़ौफ़ पैदा करने के लिये कुफ़्फ़ार के अ़ज़ाब की जगह जाओ। उम्मीद ह़ासिल करने के लिये सालिह़ीन की क़ब्रों पर जाओ, जहां रह़मतें उतर रही हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 405)

《14》 कुफ़्फ़ार के पास बसारत तो है मगर बसीरत नहीं। बसारत दिमाग़ की आंखों में और बसीरत दिल की आंखों में होती है। बसीरत पर हिदायत का मदार है। बसीरत का सुर्मा अल्लाह का ज़िक्र है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 406)

《15》 चेहरा दिल का आईना है। दिल के आसार चेहरे पर नुमूदार होते हैं। मोमिन की पहचान येह है कि उस के चेहरे पर रब तआ़ला की ह़म्द, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नात शरीफ़ सुन कर ख़ुशी के आसार नुमूदार होते हैं, कुफ़्फ़ार के मुंह बिगड़ जाते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 409)

## "सूरतुल मुअमिनीन" से ह़ासिल होने वाली 11 ख़ूब सूरत बातें

《1》 हमारे आज़ा रब की अमानतें हैं, उन से गुनाह करना अमानत में ख़ियानत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 411)

《2》 नमाज़ की हि़फ़ाज़त की तीन सूरतें हैं : हमेशा पढ़ना, सह़ीह़ वक़्त पर पढ़ना, सह़ीह़ त़रीक़े से वाजिबात, सुनन, मुस्तह़ब्बात से पढ़ना । नमाज़ पढ़ना कमाल नहीं बल्कि नमाज़ क़ाइम करना और उस की हि़फ़ाज़त करना कमाल है । सूफ़िया के मस्लक में नमाज़ की हि़फ़ाज़त येह है कि ऐसे गुनाहों से बचे जिन से नेकी बरबाद हो जाती है । माल कमाना भी अच्छा, उसे कमा कर फिर उसे संभालना बहुत अच्छा है । अल्लाह तौफ़ीक़ दे कि मरते वक़्त तक नमाज़ रोज़ा ह़ज वग़ैरा को संभालें । ख़ैरिय्यत से येह मताअ़ (असासा) मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंचे । (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 411)

《3》 विरासत मिल्किय्यत का आला ज़रीआ़ है जो न फ़स्ख़ हो सके न बात़िल हो सके न टूट सके । (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 411)

《4》 कुफ़्र से अ़क्ल भी मारी जाती है क्यूंकि मुश्रिकीन दरख़्तों, पथ्थरों वग़ैरा को ख़ुदा मान लेते थे मगर इन्सान को नबी मानने में तअम्मुल (यानी ह़ीले बहाने) करते थे । वोह समझते थे कि नुबुव्वत का बोझ इन्सान जैसी कमज़ोर मख़्लूक़ नहीं उठा सकती । (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 413)

《5》 अगर गुनाहों के बा वुजूद दुन्यावी नेमतें मिलती हों तो ख़ुदा का अ़ज़ाब है, जैसे नेकियों के बा वुजूद कभी दुन्यावी तकालीफ़ का आ जाना रब की ख़ास रह़मत है । अम्बियाए किराम या औलियाउल्लाह पर मसाइब आते रहते हैं ।

(तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 415)

《6》 ह़लाल और पाकीज़ा ग़िज़ा ह़ासिल करना बड़ी इ़बादत है, इस से इ़बादात में लज़्ज़त आती है । (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 415)

《7》 तक़्वा के माना येह नहीं कि अच्छे लज़ीज़ खाने छोड़ दिये जाएं बल्कि ह़राम कामों से बचना तक़्वा है । (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 415)

《8》 मोमिन का जितना दर्जा बुलन्द होता है, उतना ही ख़ौफ़ ज़ियादा ।

(तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 415)

《9》 ख़ौफ़े क़ियामत इन्सान को नेक बनाता है। क़ियामत से बे ख़ौफ़ी तमाम गुनाहों की जड़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 417)

《10》 कुफ़्फ़ार भी समझते थे कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की दुआ़ दाफ़ेए बला (यानी मुसीबतों को दूर करती) है। जो शख़्स इस्लाम का दावा कर के हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बारगाह से भागे, वोह उन कुफ़्फ़ार से ज़ियादा बे वुक़ूफ़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 417)

《11》 अगर्चे आ़लम के हर ज़र्रे का अल्लाह तआ़ला रब है मगर अदब येह है कि उस की रबूबिय्यत, उस की आला मख़्लूक़ की त़रफ़ निस्बत की जाए, उसे कुफ़्फ़ार का रब कह कर न पुकारो ! उसे हुज़ूर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का रब कह कर पुकारो ! (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 420)

## "सूरतुन्नूर" से ह़ासिल होने वाली 13 ख़ूब सूरत बातें

《1》 ह़ज़रते आइशा (رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا) फ़रमाती हैं : हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि अपनी औ़रतों को बालाख़ानों पर बे पर्दा न बिठाओ, उन्हें चर्ख़ा कातना और सूरए नूर की तालीम दो। ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ ने अहले कूफ़ा को लिखा कि अपनी औ़रतों को सूरए नूर सिखाओ।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 420 मुल्तक़त़न)

《2》 ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा (رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا) बीबी मरयम (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهَا) से अफ़्ज़ल हैं कि बीबी मरयम की गवाही ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दी और जनाबे आइशा सिद्दीक़ा (رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا) की इ़स्मत की गवाही ख़ुद रब ने दी।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 424 मुल्तक़त़न)

《3》 मुसलमान के घर में बिग़ैर इजाज़त घुस जाना किसी को जाइज़ नहीं और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दौलत ख़ाने में बिग़ैर इजाज़त ह़ाज़िर होना फ़िरिश्तों को भी जाइज़ नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 424)

《4》 जो दुन्या के मशागि़ल में फंसा हो, उस की इबादत रब को बड़ी महबूब है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 427)

《5》 हर हैवान की तस्बीह़ जुदा है, जिसे वोह कुदरती तौ़र पर जानता है जैसे हर जानवर की गि़ज़ा अलग जिसे वोह फ़ित्री तौ़र पर जानता है कि कुत्ता घास नहीं खाता, बकरी गोश्त नहीं खाती। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 811)

《6》 जहां तक सुल्तान की सल्तनत होती है वहां तक वज़ीरे आज़म की वज़ारत। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सल्तनते इलाहिय्या के गोया वज़ीरे आज़म हैं। तो जिस का अल्लाह रब है उस के हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) नबी हैं। इसी लिये रब की सिफ़त है रब्बुल आ़लमीन, (सारे जहानों का पालने वाला) हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सिफ़त है रह़मतुल्लिल आ़लमीन (सारे जहानों के लिये रह़मत)। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 811)

《7》 क़ानून और है कुदरत कुछ और, क़ानून के पाबन्द हम हैं न कि ह़क़ तआ़ला, आग का जला देना क़ानून है और इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को न जलाना रब की कुदरत है ऐसे ही सब का नुत़्फ़ा बनना क़ानून है और बाज़ का बिग़ैर नुत़्फ़ा पैदा होना रब की कुदरत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 428)

《8》 जिन्नात के चार हाथ पांव हैं मगर वोह इन्सानों की त़रह़ दो पांव से चलते हैं और बच्चे देते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 428)

《9》 अल्लाह व रसूल की मुत़्लक़न इत़ाअ़त करो, उन का हर हुक्म मानो। हुज़ूर मुत़ाए़ मुत़्लक़ हैं (यानी) उन का हर हुक्म बहरह़ाल मानना ज़रूरी है। आप के सिवा और बन्दे की इत़ाअ़त मुत़्लक़न (हर ह़ाल में) लाज़िम नहीं बल्कि जाइज़ हुक्म क़ाबिले इत़ाअ़त है। नाजाइज़ ना क़ाबिले इत़ाअ़त। येह भी ख़याल रहे कि इत़ाअ़त अल्लाह तआ़ला की भी होगी रसूलुल्लाह की भी और ह़ाकिम व आ़लिम की मगर इत्तिबाअ़ सिर्फ़ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की होगी।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 429)

《10》 अ़हदे सिद्दीक़ी दो बरस, तीन माह, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी दस साल छे माह और ख़िलाफ़ते उ़स्मानी बारह साल, ख़िलाफ़ते ह़ैदरी चार साल नो माह, इमामे ह़सन की ख़िलाफ़त छे माह हुई। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 429)

《11》 अपने घर में जवान बेटी मां वग़ैरा हों तो ख़बर कर के दाख़िल हो, हां अगर सिर्फ़ बीवी हो तो बिला इज़्न (यानी बिग़ैर इजाज़त) भी दाख़िल हो सकता है कि बीवी से कोई ह़िजाब (यानी पर्दा) नहीं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 430)

《12》 सुल्ताने कौनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार के आदाब खुद रब तआ़ला सिखाता है बल्कि उस ने अदब के क़वानीन बनाए और येह आदाब हमेशा के लिये हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 811)

《13》 हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शफ़ाअ़त बरह़क़ है कि रब तआ़ला ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को शफ़ाअ़त का हुक्म दिया। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शफ़ाअ़त मोमिनों के लिये है कुफ़्फ़ार इस से मह़रूम हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 432)

## "सूरतुल फ़ुरक़ान" से ह़ासिल होने वाली 11 ख़ूब सूरत बातें

《1》 क़ुरआन में ग़ैबी ख़बरों का होना, इस की ह़क़्क़ानिय्यत (यानी सच्चाई) की दलील है। ऐसे ही हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का उ़लूमे ग़ैबिय्या पर मुत्त़लअ़ होना और मुत्त़लअ़ करना (यानी छुपी बातों को अल्लाह पाक की अ़ता से जान लेना और बताना) हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की नुबुव्वत की दलील है। जो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इ़ल्मे ग़ैब का इन्कार करे वोह दर ह़क़ीक़त हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की नुबुव्वत का मुन्किर है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 433)

《2》 कुफ़्फ़ार की ह़िमाक़त (यानी बे वुक़ूफ़ी) तो देखो कि पथ्थरों लकड़ियों को इलाह (खुदा) मान लेते हैं मगर नुबुव्वत मानने के लिये बहाने बनाते थे और

नबी में ख़ुदाई सिफ़ात देखना चाहते थे कि नबी न खाए न पिये न बाज़ार जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 433)

﴾3﴿ मस्जिद में वोही आ सकता है जो पाक हो। ऐसे ही रब की बारगाह तक वोह पहुंच सकता है जिस का दिल पाक हो जिस्म की पाकी के लिये कुंएं वग़ैरा का पानी है और दिल की पाकी के लिये महब्बते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पानी दरकार है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 812)

﴾4﴿ दोज़ख़ में अ़क़्लो ह़वास, देखना सुनना, सब कुछ है, वोह मोमिन व काफ़िर को पहचानती है इसी लिये कुफ़्फ़ार को देख कर ग़ुस्सा और ग़ज़ब करेगी और मुसलमानों को देख कर उन पर सर्द (यानी ठन्डी) हो जाएगी।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 434)

﴾5﴿ गुनाहगार मोमिन दोज़ख़ से जले हुए कोइले की शक्ल में निकाले जाएंगे फिर जन्नत के पानी से वोह ऐसे उगेंगे जैसे खेत में सब्ज़ा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 434)

﴾6﴿ हमारी इ़बादात और नबी की इ़बादात में ज़मीनो आस्मान का फ़र्क़ है, जहाज़ के मुसाफ़िर पार लगने के लिये जहाज़ में बैठते हैं और जहाज़ का कप्तान पार लगाने के लिये, इसी लिये मुसाफ़िर किराया दे कर और कपतान तनख़्वाह ले कर सुवार होते हैं। इस्लाम की कश्ती में नबी और उम्मती सब सुवार हैं मगर हम पार लगने को, नबी पार लगाने को। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 434)

﴾7﴿ वसीले का इन्कार करना कुफ़्फ़ार का शेवा (यानी त़रीक़ा) है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 435)

﴾8﴿ जिस अ़क़्ल से अल्लाह रसूल की पहचान न हो वोह बे अ़क़्ली है। उन की पहचान मह़ज़ अ़क़्ल से नहीं होती बल्कि रब के फ़ज़्ल से होती है। देखो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को पथ्थरों, सूखी लकड़ियों ने पहचान लिया और न माना तो अबू जहल ने। येह लोग जानवरों से बदतर इस लिये हुए कि जानवर

रब की तस्बीह़ करते हैं, चारा देने वाले मालिक की पहचान व इत़ाअ़त करते हैं, नफ़्अ़ नुक़्सान की चीज़ें जानते पहचानते हैं अपना घर पहचानते हैं मगर कुफ़्फ़ार येह कुछ भी नहीं जानते। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 437)

《9》 बाप के नुत़्फ़े से हड्डी और मां के नुत़्फ़े से गोश्त बनता है, इसी लिये नसब बाप से है न कि मां से। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 438)

《10》 क़ुरआनी अह़काम समझने में अ़क़्ल से या तक़्लीद से काम लो और साहि़बे क़ुरआन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी में अ़क़्ल को तर्क करो।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 440)

《11》 दीनी पेशवाई (यानी मन्सब) मांगना मह़बूब है। दुन्यावी सरदारी भी ब वक़्ते ज़रूरत मांगना जाइज़ है जब कि नफ़्स के लिये न हो।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 440)

## "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" के मदनी फूलों पर काम का अन्दाज़

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से मदनी फूलों के रसाइल तय्यार करने के लिये नईमी कुतुब ख़ाने का मत़बूआ़ नुस्ख़ा, नम्बर (N163) पर काम किया गया है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम और लक़ब शरीफ़ के साथ दुरूदे पाक, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ सलाम, सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم) और औलियाए किराम (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم) के ज़िक्र के वक़्त तरज़्ज़ी व तरह़ीम (यानी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ और رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) का इज़ाफ़ा किया गया है। हर मदनी फूल के बाद ह़वाला दिया गया है। मुश्किल अल्फ़ाज़ के माना ब्रेकेट में पेश किये गए हैं और बाज़ मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के तलफ़्फ़ुज़ और एराब का इज़ाफ़ा किया गया है। ज़रूरतन अंग्रेज़ी अल्फ़ाज़ भी शामिल किये गए हैं। पुरानी उर्दू के बाज़ अल्फ़ाज़ या जुम्लों को मुरव्वजा (यानी आज कल बोली जाने वाली) उर्दू के एतिबार से कुछ आसान करने की कोशिश की गई है। चन्द मक़ामात पर मुश्किल मदनी फूलों को ख़ुलासतन बयान किया गया है, कुछ मक़ामात पर अक़्वाल की हेडिंग्ज़ दी गई हैं ताकि पढ़ने वालों के लिये अक़्वाल की

अहमिय्यत मज़ीद बढ़े । मुफ़्ती साहिब رَحۡمَةُاللّٰهِ عَلَيۡه ने कई मक़ामात पर तफ़्सीरी निकात बयान करते हुए ज़िम्नन अहादीसे मुबारका बयान की हैं, पढ़ने वालों के ज़ौक़ के लिये उन अहादीसे मुबारका की तख़्रीज भी की गई है । चन्द मवाक़ेअ़ पर मौज़ूअ़ की मुनासबत से पढ़ने वालों को नेकियों की तरग़ीब दिलाने वग़ैरा के इफ़ादात शोबा "हफ़्तावार रिसाला मुतालआ" की तरफ़ से शामिल किये गए हैं ।

सिर्फ़ ऐसे निकात (मदनी फूलों) को बाक़ी रखा गया है जो जुदागाना तौर पर एक क़ौल हैं । ऐसे अक़्वाल जिन को समझने के लिये आयते मुबारका की ज़रूरत हो उन्हें रिसाले में शामिल न करने की कोशिश की गई है ।

## फ़ेहरिस्त


| उनवान | सफ़्हा नम्बर | उनवान | सफ़्हा नम्बर |
|---|---|---|---|
| सूफ़िया की इस्तिलाह में नेक अ़मल | 03 | सारी मख़्लूक़ हुज़ूर की नज़र में है | 09 |
| इल्म की तलब और सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ अहम मालूमात | 04 | कुरबानी के जानवर सजाना | 10 |
| कुल चार बादशाह तमाम दुन्या के मालिक हुए | 04 | शआइरुल्लाह की ताज़ीम ईमान की अस्ल है | 10 |
| नाम में भी रब का कोई शरीक नहीं | 05 | चेहरा दिल का आईना है | 10 |
| हुज़ूर से पहले किसी का भी नाम मुहम्मद न रखा गया | 05 | हमारे आज़ा रब की अमानतें हैं | 10 |
| क़ियामत में कुफ़्फ़ार की चन्द खुली अ़लामतें | 06 | हर हैवान की तस्बीह जुदा है | 13 |
| दीनी उमूर से बे इल्मी जुर्म है | 06 | दोज़ख़ मोमिन व काफ़िर को पहचानती है | 15 |
| याजूज माजूज इन्सानों के दो क़बीले हैं | 08 | दीनी पेश्वाई (मन्सब) मांगना महबूब है | 16 |

## अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

**Delhi :** 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

**Mumbai :** 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

**Ahmedabad :** Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

**Nagpur :** Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025